बुधवार

07 अक्टूबर 2026

जन्मदिन विशेषांक

दीपान्विति

घटनाओं, विचारों और कहानियों की कड़ियाँ



पापा (दिनेश कुमार), भाई (जयंत कुमार), माँ (नीलू देवी)

मेरे पिता: मेरे महानायक

76वें जन्मोत्सव पर विशेष!

---------- **दीपा दिनेशनील**

पिता अपनी संतान का सबसे पहला आदर्श होता है। वही पिता जब अपनी संतान के साथ-साथ अपने सहकर्मियों, परिजनों और समाज के लिए भी आदर्श बन जाए तब ऐसे पिता पर गर्व होना स्वाभाविक है। मेरे पिता श्री दिनेश कुमार एक ऐसे ही व्यक्तित्व हैं जिन पर जितना भी लिखा जाए कम होगा।

सेवा, समर्पण, निःस्वार्थ भाव, सहिष्णुता, आत्मविश्वास, दृढ-संकल्प – इन सभी मानवीय गुणों का संगम हैं दिनेश कुमार। ऐसा नहीं है उनमें कोई ऐब नहीं है - हठी हैं, जो ठान लेते हैं करके छोड़ते हैं, क्वालिटी से कॉम्प्रोमाईज़ करना नहीं जानते हैं, अनैतिकता के खिलाफ़ खुल कर आवाज़ उठाते हैं, ईमानदारी का कीड़ा शायद उन्हीं से हम दोनों भाई-बहनों में ट्रांसफ़र हुआ है – इन्हें मैं ऐब इसीलिए कह रही हूँ क्योंकि आज कल इन बातों से परेशानियाँ अधिक मिलती हैं। मगर पापा उन परेशानियों से कभी कमज़ोर नहीं पड़े। उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता इस बात का प्रमाण है क्योंकि उन्होंने सदैव परिस्थितियों से समझौता करने की बजाय उसका सामना करना चुना।

उन्होंने जो भी सिखाया वह कोरा ज्ञान नहीं, आचारण से सिखाया। एक बार उन्हें किसी ने रिश्वत देने का प्रयास किया था तब पापा ने न सिर्फ वो पैसे लौटाए थे, बल्कि उन महाशय को फटकार भी लगाई थी कि दोबारा ऐसी हरकत की तो बनता हुआ काम भी रुक जाएगा। जब मुझे इस घटना का पता चला तो मैंने लभगग अफ़सोस जताते हुए कहा था – "ले लेना था न पापा। हर रोज़ माँ पैसों के लिए चिंता करती है – मजदूरों को देने के लिए पैसे कहाँ से आएगा, काम बीच में ही रुकवाना पडेगा।" उन दिनों पापा अपना घर बनवा रहे थे और उन्हें पैसों की सख्त आवश्यकता थी। तब पापा ने कहा था - "पतन की राह बड़ी चिकनी होती है, और यदि उस पर प्रलोभन के दो-चार धक्के लग जाएँ तो भला कौन खड़ा रह सकता है।" इस पर मैंने बोला, "मगर आपने माँगा थोड़े ही था। वह खुद आपको देने आया था, किसी को क्या ही पता चलता!" पापा का जवाब था, "जिस काम को दस लोगों के सामने नज़रें उठाकर बताने में संकोच हो, वह काम नहीं करना चाहिए।" तब मेरी उम्र बारह-तेरह साल रही होगी मगर उनकी वो बातें मुझे अक्षरशः याद रह गयीं।

पापा को लोग 'कलयुग का श्रवण कुमार' बुलाते थे। जब तक दादी जीवित थीं, पापा के लिए उनकी हर बात मानना परम कर्तव्य था। उस ज़माने में, पापा जैसे पुरुष विरले ही होते थे जो माँ और पत्नी दोनों की भावनाओं का ख्याल रखता हो, और दोनों को समान सम्मान देता हो। दादी भी पूरे परिवार में एकमात्र दिनेश पर भरोसा करती थी। माँ-पुत्र का वो सम्बन्ध याद कर आज भी मन पुलकित हो उठता है। उनकी संवाद-कला की भी मैं गहरी प्रशंसक हूँ। उग्र या उत्तेजित हुए बिना वे केवल

जन्मदिन विशेष

श्री दिनेश कुमार: एक परिचय

---------- **दीपा दिनेशनील**



7 अक्टूबर 1950 को बिहार राज्य के दरभंगा जिले के एक छोटे किन्तु उन्नत गाँव 'केवटी' के एक साधारण कायस्थ परिवार में एक असाधारण बालक ने जन्म लिया। माता-पिता ने नाम रखा – दिनेश लाल दास, किन्तु उस काल की सामाजिक परिस्थितियों के कारण उनका 'लाल दास' 'कुमार' में बदल गया और कालांतर में यह बालक 'कुमार साहब' के नाम से विख्यात हुआ। पिता दामोदर लाल दास बैक में अधिकारी थे और माँ कुसुम देवी गृहणी। उन दिनों बैंक की नौकरी होना बहुत बड़ी बात थी, सो केवटी में परिवार का नाम था, प्रतिष्ठा थी। छह भाई-बहनों में दिनेश पाँचवी संतान हैं, उनसे छोटी एक बहन है। छोटा पुत्र होने के नाते माता-पिता के चहेते रहे, खास कर माँ के दुलारे थे। बचपन से ही दिनेश शांत और गंभीर स्वभाव के हैं। माँ से हठ किया करते थे, किन्तु बाहरवालों के लिए सख्त थे। उन्हें बचपन से ही पढने-लिखने का बड़ा शौक रहा है। गाँव की लाइब्रेरी के सदस्य थे और हिंदी व अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में उपन्यास, कहानियाँ और साहित्य पढ़ना पसंद करते थे।

1977 में एसएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर दिल्ली सेक्रेटेरियट में एक वर्ष नौकरी की किन्तु पिता के आकस्मिक मृत्यु के बाद माँ के पास रहने के इरादे से वे दिल्ली की नौकरी छोड़ मधुबनी आ गए जहाँ भारतीय स्टेट बैंक की नौकरी उनकी राह देख रही थी। इसी बीच नीलू नामकी एक सुन्दर कन्या के साथ उनका विवाह करवा दिया गया और वे गृहस्थ जीवन में बंध गए। उनकी दो संतानें हुईं और दोनों अपने-अपने जीवन में सफल हैं। जीवन के बहुमूल्य 34 साल भारतीय स्टेट बैंक में बिताने के बाद वर्ष 2011 में वे स्टेट बैंक के उच्च पद





दिनेश कुमार के विविध रूप

तर्क शक्ति से दूसरों का मत परिवर्तित कर सकते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में मैंने उन्हें अविचल और निडर देखा है। अपने कर्तव्यों से वे कभी पीछे नहीं हटते हैं। पारिवारिक दायित्व हो, सामाजिक सरोकार या समाज सेवा, हर कार्य में सामंजस्य स्थापित करते हुए बड़े प्रभावी ढंग से वे अपने दायित्व निभाते हैं। दोस्तों के लिए सच्चे दोस्त, परिवार जनों के लिए 'द मोस्ट रिलाएबल फैमिली मैन' और हम बच्चों के लिए सबसे फेवरेट इंसान – पापा हम सबके चहेते और लोकप्रिय हैं।

पापा होते-होते पता नहीं कब वे मेरे सबसे अच्छे दोस्त बन गए, याद नहीं। मैं उनसे दुनिया की कोई भी बात कर सकती हूँ – राजनीति, देश-विदेश, फ़िल्में (मेरा फेवरेट), समसामियिकी – कोई भी मुद्दा, कैसी भी बहस हो पापा के साथ अच्छा-खासा समय चुटकियों में गुज़र जाता है। पापा ने मुझे उस समय आजादी दी जब लड़कियों पर हज़ार अंकुश लगा कर घर के काम-काजों में झोंक दिया जाता था। मेरी राय मायने रखती है – ये भरोसा भी पापा ने बचपन से ही दिलाया। माँ-पापा दोनों ने कभी हम दोनों भाई-बहनों में कोई अंतर नहीं किया, उल्टा मुझे हर कदम पर प्रोत्साहन दिया, मेरी गलतियों को माफ़ किया और मेरा भरोसा करना कभी नहीं छोड़ा। मैं 'पापा की परी' भी बनी और उनका मान-सम्मान और अभिमान भी। यह पापा की दूरदर्शिता और संस्कारों का ही परिणाम है कि आज कोसों दूर होते हुए भी हम मन से एक-दूसरे से हर वक़्त जुड़ा महसूस करते हैं।

पापा ने बदलते समय को बड़ी सहजता के साथ अपनाया है। तभी उनकी बहू उनके साथ बेटी सा बर्ताव करती है और दामाद बेटा बना हुआ है। उनके नाती-पोती के वे सबसे फेवरेट बाबा हैं। एक संयुक्त परिवार में पले-बढे मेरे पापा अपने भतीजे-भतीजियों, भांजे-भांजियों के बीच भी बेहद लोकप्रिय हैं। परिवार में 'सुन्दर चाचा' के नाम से प्रख्यात पापा हर किसी के साथ बहुत सहज हैं और सरलता से घुल-मिल जाते हैं। न उनकी कोई माँग रहती है, न कोई नखरा – शायद तभी वे हर जगह आमंत्रित किये जाते हैं और सम्मानित होते हैं। स्वावलंबी हैं, आत्मनिर्भर हैं और अपना कार्य स्वयं करने की यथासंभव कोशिश करते हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी जोश में कोई कमी नहीं है – स्वयं को अब भी सुपरमैन समझते हैं – 'सब हो जाएगा' वाला जज़्बा हर वक़्त कायम रहता है।
ईश्वर उन्हें दीर्घायु करें! स्वस्थ रखें! प्रसन्न रखें!
शुभ जन्मदिवस तुभ्यम्!!

दिनेश कुमार ...

से बड़े सम्मानपूर्वक रिटायर हुए। बैंक में अपने सरल स्वभाव और स्वच्छ छवि के लिए कुमार साहब अपने सहकर्मियों, अफसरों एवं ग्राहकों के बीच सदैव लोकप्रिय रहे। उनके एक सहकर्मी बताते हैं कि कुमार साहब की सबसे बड़ी पूंजी उनकी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठता रही है। धनार्जन कभी उनका ध्येय नहीं था और यही उन्हें भीड़ से अलग एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है। शायद यही कारण है कि अवकाशप्राप्ति के सोलह साल बाद आज भी बैंक अधिकारियों के बीच उनकी साख बरक़रार है।

पठन-पाठन के शौक ने उन्हें सदा सक्रीय रखा। वे सेबी (SEBI) एवं अन्य बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थानों में अध्यापन से निरंतर जुड़े रहे। आज भी समय-समय पर ये संस्थाएँ उनकी सेवाएँ लेती रहती हैं। दिनेश कुमार अपने खाली समय में कई प्रकार के कार्यों में लिप्त रहते हैं। इनमें सबसे पहले नंबर पर बागवानी आता है। उन्होंने बिहार सरकार की योजना के अंतर्गत अपने घर की छत पर 'ओर्गानिक फार्मिंग' आरम्भ की और प्रतिदिन अपने पेड़-पौधों के साथ घंटों समय बिताते हैं। ज़रूरत से अधिक उपज को मोहल्ले और जान-पहचान वालों में बाँट देते हैं। यहाँ भी



सेवा-भाव ही उनका साथी है। कुमार साहब को मधुमक्खी पालन और फोटोग्राफी का भी शौक रहा है किन्तु समय के अभाव में अब ये दोनों कार्य नहीं कर पाते। साहित्य, कवि-सम्मलेन और नाटकों में रूचि रखने वाले कुमार साहब जब भी मौक़ा मिलता है, पटना के विभिन्न आयोजनों में यथा-संभव अवश्य शामिल होते हैं। उम्र के 76वें पड़ाव पर भी उनकी सक्रियता, नए विषयों और सूचनाओं के प्रति उनकी उत्सुकता, नया सीखते रहने की उनकी ललक उन्हें विशेष और असाधारण बनाती है। वे अपने जानने वालों के बीच बेहद लोकप्रिय, प्रियजनों के आत्मीय और परिवार जनों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उन्हें इस विशेष दिन की असीम शुभकामनाएँ!



प्रिय मामा,
आपके 76वें जन्मदिन पर आपको बहुत शुभकामनाएँ!

आप मेरे लिए हमेशा से बहुत खास रहे हैं। आपका स्नेह, आपका मार्गदर्शन और आपका व्यक्तित्व मेरे लिए प्रेरणा और शक्ति का स्रोत रहा है। जीवन के अनेक अवसरों पर आपसे मुझे बहुत कुछ सीखने और संबल पाने का अवसर मिला है।

आपके साथ समय बिताना मुझे हमेशा बेहद अच्छा लगता है। आपकी आत्मीयता और अपनापन हर मुलाक़ात को यादगार बना देते हैं। मेरे जीवन में आपका होना मेरे लिए सचमुच बहुत सौभाग्य की बात है। ♡

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आपको उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और ढेर सारी खुशियाँ दें। आपका स्नेह और आशीर्वाद हम सभी पर हमेशा बना रहे।

76वें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई, मामा! 🙏
आप शतायु हों, स्वस्थ रहें और हमेशा इसी तरह प्रसन्न और ऊर्जावान बने रहें।

बहुत सारा प्यार और सादर प्रणाम। ♡🙏

आपका अपना – हेमन्त